Scanned with OKEN Scanner

स्वत्वाधिकारी– रमाशंकर मिश्र

संस्करण– प्रथम सन् 2006

प्रकाशक– रमाशंकर मिश्र
(निवर्तमान प्रधानाचार्य)
बबेरू–बाँदा (उ0प्र0)

मूल्य– पैंसठ रुपये

मुद्रक– कुशवाहा प्रिंटिंग प्रेस
बबेरू (बाँदा) उ0 प्र0

VIVIDH BHAW TARANGEN byRamashankar mishra

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

1. रचनायें, विशेष	अ, ब
2. प्राक्कथन	स
3. शुभकामना	द, य
4. असत्पथ से सत्पथ की ओर	1
5. कृतकर्मों का फल	3
6. भगिनी निवेदिता के भावपत्र में	5
7. संपूर्णता जीवन की	7
8. पराक्रम से बढकर उपाय	8
9. प्लेटो ने कहा था	10
10. अंत भला तो सब भला	11
11. मृतक कौन ?	12
12. सच्चरित्र की विभूति	13
13. विश्वास	14
14. महत्ता प्रणाम की	15
15. सार्थक उपदेश	19
16. आज के मानव सेवक संत	20
17. धन्य वह जीवन जो दूसरों के काम आये	23
18. महातीर्थ चित्रकूट	25
19. सपने नव वर्ष के	28
20. महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला थे	29
21. सदा सत्य की विजय	30
22. अनुकूल और प्रतिकूल	32
23. अंग्रेजियत का शौक	33
24. दीन–हीनों की हानि	34
25. आनन–हृदय–पावनता की शिक्षा	36
26. अतीत और वर्तमान के संत	37
27. श्रमिक–सुता	38

Scanned with OKEN Scanner

28. उदर में पल रही दुहिता की मां से विनय 39
29. सर्वशक्तिमान् ईश्वर को उपालंभ 45
30. स्नेह–सन्मार्ग 49
31. मानव और वानर 51
32. सच्चा धर्म 54
33. ईर्ष्या और निंदा 55
34. संत कबीर और शैतान 56
35. अतीत का संस्मरण 1 57
36. अतीत का संस्मरण 2 61
37. अतीत का संस्मरण 3 63
38. प्राची के सौन्दर्य क्षितिज में 65
39 अभीप्सा 67
40. सिकन्दर को ज्ञान–विभूति की उपलब्धि 68

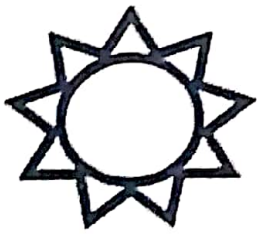

Scanned with OKEN Scanner

अंग्रेजियत का शौक

अंग्रेजी है अंतर्राष्ट्रीय भाषा,
जिसका ज्ञान है अनिवार्य।
इससे ही होते हैं सारे कार्य।
भारत में विडंबना है,
अंग्रेजी भाषा नहीं आती,
न बोल पाते हैं,
न लिख पाते हैं।

परंतु अंग्रेजियत अच्छी लगती है,
अंग्रेजी पहनावा, सूट, बूट, टाई,
सबके प्रति अतिशय लगाव है,
इसे अपनाने का अत्यधिक चाव है।
एक सज्जन सूटेड, बूटेड टाई बाँधे,
लगते थे अंग्रेजी के बेहद जानकार।
उनके पास एक किसान अंग्रेजी में टेलीग्राम लाया,

वे उसे पढ न सके,
नाक भौं सिकोडने लगे,
बगल में मैं धोती–कुर्ता पहने बैठा हुआ,
अंग्रेजियत से दूर,
पर अंग्रेजी था जानता।

टेलीग्राम का अर्थ मैंने बतलाया।
किसान को मेरा भाषायी ज्ञान भाया।।
वह बोला, 'बाबू जी, यह टाई है हवाई,
अंग्रेजी सीखो,
अंग्रेजियत को देकर विदाई।।'

Scanned with OKEN Scanner

कवि की जीवन रेखा

नाम	– रमाशंकर मिश्र ।
पिता	– वैद्य स्व० श्री रामकृष्ण मिश्र शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य (कान्यकुब्ज ब्राह्मण, बैजे गाँव के मिश्र) ।
माता	– स्व० श्रीमती सुन्दर देवी मिश्रा ।
धर्मपत्नी	– श्रीमती शैल कुमारी मिश्रा ।
जन्म तिथि	– भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी संवत् 1991 ।
जन्म स्थान	– दारागंज, प्रयाग (उ० प्र०) ।
पिता का जन्म स्थान	– यमुना तट पर स्थित ग्राम समगरा–मर्का (बाँदा) ।
पिता का निवास स्थान	– सर्वप्रथम कतिपय वर्ष दारागंज, प्रयाग एवं तत्पश्चात कर्वी (चित्रकूट) उ0प्र0
शिक्षा	– एम.ए. (अंग्रेजी) इलाहाबाद विश्वविद्यालय, एम.ए (हिन्दी) आगरा विश्वविद्यालय, साहित्य रत्न (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग), एल.टी. (सेवाकालीन) के.पी. ट्रेनिंग कालेज इलाहाबाद ।
स्थायी आवास	– साहित्य सदन, बबेरू (बाँदा) ।
सेवा स्थल	– श्री जे.पी. शर्मा इण्टर कालेज, बबेरू (बाँदा) में प्रवक्ता एवं प्रधानाचार्य के रूप में अगस्त 1957 से जून 1995 तक कार्यरत रहे ।
वर्तमान पता	– रमाशंकर मिश्र, निवर्तमान प्रधानाचार्य, साहित्य सदन, बबेरू जनपद बाँदा फोन : 9415569875

मुद्रक:
कुशवाहा प्रिंटिंग प्रेस बबेरू (बाँदा) उ.प्र.

Scanned with OKEN Scanner